74

''फरीसियों के खमीर से चौकस रहो''

मत्ती 23:1-39; मरकुस 12:38-40; लूका 20:45-47, एक निकट दृष्टि

एक दिन यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया, ''देखो, फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना''[1] (मत्ती 16:6)। पहले तो, चेले उसकी चेतावनी से परेशान हो गए, लेकिन अन्त में ''उनकी समझ में आया कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं, पर फरीसियों और सदूकियों की *शिक्षा* से चौकस रहने को कहा था'' (मत्ती 16:12)।[2] एक अन्य अवसर पर, उसने कहा, ''फरीसियों के *कपट रूपी* खमीर से चौकस रहना'' (लूका 12:1)।

मसीह का कोई भी शत्रु इतना हठी नहीं था, जितने फरीसी थे। कोई ऐसा पाठ नहीं होगा, जिसमें हमने उनका हठ न देखा हो। समय-समय पर, हमें विस्तार से बताया गया है कि वे कौन थे,[3] उनका विश्वास क्या था, और वे प्रभु से क्यों घृणा करते थे। जितने विस्तार से मत्ती 23 में बताया गया है, उतना इससे सम्बन्धित मरकुस और लूका के पदों में नहीं बताया गया। यीशु ने अपने चेलों को फरीसियों के खमीर (अर्थात प्रभाव) से चौकस रहने की चेतावनी क्यों दी? उसने क्यों कहा कि फरीसियों का खमीर कपट था? इन प्रश्नों का पूरा उत्तर देने के लिए, मत्ती 23 का अध्ययन करना आवश्यक है।

प्रभु ने इतने कठोर शब्दों का इस्तेमाल इस अध्याय के अलावा और कहीं नहीं किया था। जिस पाठ का हमने अभी अध्ययन किया है, उसमें[4] हमने कई सम्भावित कारणों को देखा था कि प्रभु ने इतनी कठोरता से बात क्यों की-जिसमें यह सम्भावना भी शामिल है कि उसे उम्मीद थी कि इससे फरीसियों को कुछ समझ आ जाएगी। मैं इस संदेश का एक और कारण जोड़ता हूं: यह इसलिए सम्भालकर रखा गया है, *क्योंकि मुझे और आपको भी इसकी आवश्यकता है।* यीशु की बातों की हर जगह आवश्यकता है; पूरी मनुष्य जाति कहीं न कहीं, कम या ज्यादा फरीसियों के पापों से दूषित है। इसके अलावा फरीसियों की तरह हम में से कई लोग अपनी कमियों से अनजान हैं। प्रभु द्वारा ''बिजली का झटका'' दिए जाने से हमें भी लाभ हो सकता है।

हमें दूसरों के कपट का पता लगाना आसान लगता है,[5] पर अपने कपट को देखना कठिन

लगता है। मत्ती 23 अध्याय का अध्ययन करते हुए, आइए हम इसे *अपने ऊपर* लागू करें।[6]

व्याख्या[7]

(मत्ती 23:1-12; मरकुस 12:38, 39; लूका 20:45, 46)

मसीह ने उन ''हायों'' की पृष्ठभूमि बनाते हुए, जो बाद में उसने कहनी थीं, पहले भीड़ को सम्बोधित किया: ''शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं'' (मत्ती 23:2)। शास्त्री और फरीसी अपने आप बैठे थे, पर आम तौर पर उन्हें मूसा की व्यवस्था पर अधिकारियों के रूप में जाना जाता था। शास्त्री फरीसियों के साथ ही गिने जाते थे, क्योंकि उनमें से अधिकतर उन्हीं के गुट के सदस्य होते थे। ''इसलिए वे तुम से जो कुछ कहें वह करना और मानना'' (मत्ती 23:3क)। अर्थात, ''उनकी कोई भी बात *जो मूसा की शिक्षा से मेल खाती है,* उसे करना और मानना।'' ''परन्तु उनके से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं'' (मत्ती 23:3ख)। फरीसियों पर यीशु के आरोप लगाने का सार इन शब्दों में मिलता है, ''वे कहते तो हैं पर करते नहीं।'' न्यू इन्टरनैशनल वर्ज़न का अनुवाद है, ''वे जिस बात का प्रचार करते हैं, उसे स्वयं नहीं करते।'' जैसा कि पहले ज़ोर दिया गया था, फरीसी कपट के दोषी थे (मत्ती 23:13, 14, 15, 23, 25, 27, 29; देखें लूका 12:1)।[8]

मसीह ने फरीसियों की ''कहते हैं पर करते नहीं'' की जीवन शैली का एक उदाहरण दिया: ''वे एक ऐसे भारी बोझ को जिस को उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्य के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते'' (मत्ती 23:4)। व्यवस्था अपने आप में भारी थी (प्रेरितों 15:10), पर उन्होंने अपनी परम्पराओं, का बोझ भी डाल दिया था (मरकुस 7:3)। वे दूसरों के कंधों पर व्यवस्था और परम्पराओं दोनों को लादते थे, परन्तु उन्होंने ऐसी-युक्तियां निकाल ली थीं, जिनसे उन्हें स्वयं व्यवस्था का पालन न करना पड़े।[9] हमने बूढ़े माता-पिता की देखभाल से बचने के लिए उनके ''कुरबान'' का एक उदाहरण देखा था (मरकुस 7:11-13)। शपथ खाने के उनके ढंग से, जिससे वह शपथ लागू न हो, पर भी इस पाठ के लिए ऊपर की आयतों में एक और उदाहरण है (मत्ती 23:16-22)।

तौ भी, फरीसी चाहते थे कि सब लोग उन्हें अति-धर्मी *मानें:* ''वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिए करते हैं: वे अपने तावीज़ों को चौड़े करते'' (मत्ती 23:5क)। ''तावीज़'' शब्द का अर्थ ''रक्षा-साधक, रक्षा के लिए उपाय है।'' यहूदी लोग इस शब्द का इस्तेमाल चमड़े की छोटी डिब्बियों के लिए करते थे, जिनमें वे पवित्र शास्त्र की विशेष आयतें रखते थे। वे इन छोटी डिब्बियों को अपनी भुजाओं से और माथे पर बांधते थे और अपनी चौखटों पर लटकाते थे। यह मनुष्य द्वारा बनाई गई परम्परा व्यवस्थाविवरण 6:8, 9 के शब्दों की व्याख्या के कारण थी[10] (व्यवस्थाविवरण 11:18-20 भी देखें)। फरीसी दूसरे लोगों की डिब्बियों से अपनी डिब्बियां बड़ी बनवाकर ''अपने तावीज़ों को चौड़ा करते'' थे।[11]

इसी विचार के साथ, यीशु ने कहा, ''[वे] अपने वस्त्रों की कोर बढ़ाते हैं''। (मत्ती 23:5ख) मूसा ने इस्राएलियों को व्यवस्था को याद रखने के लिए अपने वस्त्रों के ''चारों

छोरों'' पर झालर लगाने की आज्ञा दी थी (गिनती 15:38, 39; व्यवस्थाविवरण 22:12)।[12] फरीसियों ने अपनी यादगारी झालरों को दूसरे लोगों से बड़ी बना लिया था।

मरकुस और लूका के वृत्तांतों के अनुसार, यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों के कल्पित दिखावों का एक और उदाहरण दिया[13] कि उन्हें ''लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना'' (मरकुस 12:38; देखें लूका 20:46) अच्छा लगता है। झाड़ू लगाने वाले लम्बे वस्त्र ''धनी और विद्वान लोगों के वस्त्र'' होते थे (मरकुस 12:38; LB)।[14]

ये धार्मिक अगुवे ऐसा दिखावा क्यों करते थे? ताकि लोग उन्हें मानें: ''जेवनारों में मुख्य जगहें'' उन्हें पसन्द हैं (मत्ती 23:6क)। यह जगह मेज़बान के बिल्कुल निकट वाले मेज़ पर होती थी (देखें लूका 14:7-11)। ''और सभा में मुख्य-मुख्य आसन'' (मत्ती 23:6ख) उन्हें पसन्द हैं। ''मुख्य आसन सीटों की अर्द्धचक्र वाली कतार थी, जो पढ़ने वाले के डेस्क के पीछे और मण्डली के सामने थीं।''[15] ''बाज़ारों में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है'' (मत्ती 23:7)। उन्हें लोगों से सलाम लेना और ''रब्बी, या बड़ा आदमी'' जैसे पदों से सुशोभित होना अच्छा लगता था!

''रब्बी'' शब्द के उल्लेख से प्रभु ने धार्मिक उपाधियों पर एक छोटा सा संदेश दे दिया:

> परन्तु, तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु [अर्थात, मसीह[16]] है; और तुम सब भाई हो। और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है। और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात मसीह है (मत्ती 23:8-10)।[17]

जब यीशु ने लोगों को ''गुरु'' ''पिता'' या ''स्वामी'' न कहने के लिए कहा, तो इसका अर्थ यह नहीं था कि इन शब्दों का इस्तेमाल ही नहीं होना चाहिए। नया नियम उनकी बात करता है, जो सिखाने या ''गुरु'' (इफिसियों 4:11) या ''अगुवा'' (इब्रानियों 13:17, 24) और अपने पिता को ''पिता'' कहना किसी भी प्रकार गलत नहीं है (इफिसियों 6:2)।[18] बल्कि मसीह तो धार्मिक शीर्षकों के इस्तेमाल की निन्दा करता है, जैसे दूसरों से ऊपर ''कुछ चुनिन्दा'' लोगों को विशेष उपाधियां देना। महान प्रेरित केवल ''भाई पौलुस'' था (2 पतरस 3:15), और उसकी महिला सहकर्मी ''बहन फीबे'' (रोमियों 16:1)। किसी भी मसीही के लिए यह पारिवारिक शब्दावली ही पर्याप्त होनी चाहिए।

भर्त्सना (मत्ती 23:13-36; मरकुस 12:40; लूका 20:47)

अब यीशु ने फरीसियों को सम्बोधित करना था। उसने उनकी ओर मुंह करके आठ ''हाय'' कहीं। इनमें से सात मत्ती की पुस्तक में हैं, जबकि मरकुस और लूका में लिखित प्रभु के शब्दों में आठवीं ''हाय'' का सुझाव मिलता है।[19] भर्त्सना के लिए मसीह के शब्द ''अब तक के सबसे भयानक शब्द'' हैं![20] यीशु ने इस अवसर पर फरीसियों के पापों को संक्षिप्त कर दिया।[21]

परम्परा बनाम सच्चाई (मत्ती 23:13)

मसीहा के बारे में उनके मन में पहले बने विचारों के कारण उन्होंने यीशु को राजा के रूप में स्वीकार नहीं किया। इन विचारों ने उन लोगों को भी, जिन्होंने उनसे सीखा था, सच्चाई को मानने से दूर रखा।[22]

धन बनाम कृपा (मत्ती 23:14; मरकुस 12:40; लूका 20:47)

जब विधवाएं फरीसियों पर भरोसा रखकर कि वे उनकी देखभाल करेंगे, उनके पास जाती थीं तो ये अगुवे उनकी सम्पत्ति से उन्हें ठगने के लिए युक्तियां निकालकर उनका लाभ उठाते थे।[23] परमेश्वर की दृष्टि में विधवाओं को लूटना भयंकर पाप रहा है (निर्गमन 22:22-24; व्यवस्थाविवरण 27:19)।

विजय बनाम परिवर्तित लोग (मत्ती 23:15)

यहूदी लोग अन्यजातियों को यहूदी मत में परिवर्तित करने की कोशिश में बड़े उग्र प्रचारक थे (आयत 15)।[24] दुर्भाग्य से, फरीसियों की दिलचस्पी सच्चे परमेश्वर में परिवर्तित करने के बजाय लोगों को और फरीसी बनाने में थी। अपने भ्रमित विश्वासों से सिखाकर ''विजय'' पाने पर, वह चेला ''पुरनियों की रीति'' (मरकुस 7:3) के लिए उनसे भी दोगुना जोशीला होता था-इस प्रकार उनकी तरह ही वह भी ''नरक का दोहरा भागी'' होता था।[25]

सुविधा बनाम समर्पण (मत्ती 23:16-22)

पुराने नियम की शिक्षा थी कि शपथ यूं ही न खाई जाए, यानी इसे पूरा करना आवश्यक था (गिनती 30:2)। परन्तु फरीसियों की शिक्षा थी कि शपथ इस प्रकार खाई जा सकती है, जिससे शपथ खाने वाले पर ज़िम्मेदारी भी न पड़े (मत्ती 23:16, 18)। यीशु ने इस तर्क की गलती को उजागर किया (आयतें 17:19-22)। याद रखें कि उसने पहले अपने अनुयायियों को ये निर्देश दिए थे: ''मैं तुम से यह कहता हूं, कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है, न ही धरती की, क्योंकि वह उसके पांवों की चौकी है'' (मत्ती 5:34, 35क)।

छोटी बनाम बड़ी (मत्ती 23:23, 24)

फरीसी लोग अपने बगीचों से तोड़े गए पुदीने का दसवां भाग देने, अर्थात दसमांश की ऐसी धार्मिक रीतियों के प्रति बड़े चौकस थे।[26] इसके बजाय वे अपने मनों की स्थिति के बारे में अचेत थे अर्थात उन्होंने ''... व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया'' था (आयत 23क[27]; देखें मीका 6:8)।

प्रभु ने उन्हें ''अन्धे अगुवे''[28] कहा, जो ''मच्छर को तो छान डालते हैं, परन्तु ऊंट को निगल जाते हैं'' (मत्ती 23:24)। यह अर्ध-उपहास वाले रूपक में फरीसियों को अपने पीने वाले पानी में से मच्छर निकालने वाले के रूप में (लैव्यव्यवस्था 11:20, 23) दिखाया गया,

जो उतने ही अशुद्ध ऊंट को खा जाने से नहीं हिचकिचाते थे (लैव्यव्यवस्था 11:4)।

23 और 24 आयतों में, यीशु यह कह रहा था कि परमेश्वर की सभी आज्ञाओं को मानने का ध्यान रखना गलत है, चाहे कुछ लोग उन्हें ''छोटी'' ही कहते हैं? बिल्कुल नहीं। उसने कहा, ''चाहिए था कि इन्हें [अर्थात छोटी बातों को] *भी करते रहते,* और उन्हें [यानी भारी बातों को] भी न छोड़ते'' (मत्ती 23:23ख)।

सतह बनाम आत्मा (मत्ती 23:25, 26)

मसीह ने बर्तनों का उदाहरण इस्तेमाल किया जो बाहर से तो साफ़ थे, पर अन्दर से गंदे थे (आयत 25; देखें लूका 11:39)। उसने फरीसियों को बताया कि यदि वे कटोरे को अन्दर से साफ़ करें, तो बाहर से वह अपने आप ही साफ़ हो जाएगा (आयत 26)। अगली बार जब आप बर्तन साफ़ करने लगें तो उन्हें केवल अन्दर से ही साफ़ करके न छोड़ दें। कप इससे साफ़ नहीं होंगे, पर यदि मन और जीवन को अन्दर से साफ़ किया जाए तो अवश्य पूरा व्यक्ति साफ़ हो जाएगा!

दिखावट बनाम वास्तविकता (मत्ती 23:27, 28)

यीशु ने बाहर-भीतर का एक और अन्तर इस्तेमाल किया:[29] फरीसी ''चूना फिरी हुई कब्रों के समान'' थे, ''जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं'' (आयत 27)। फरीसी बाहर से धर्मी थे, पर अन्दर से ''कपट और अधर्म से भरे हुए'' थे (आयत 28)।

वाक्पटुता बनाम यथार्थता (मत्ती 23:29-36)

फरीसी प्राचीन समय के नबियों का सम्मान करने का दिखावा करते थे (आयत 29) और ज़ोर देते थे कि वे अपने पूर्वजों की तरह नहीं हैं, जिन्होंने नबियों को मार डाला था (आयत 30; देखें आयत 37)। यीशु ने कहा कि वे अपने बाप-दादों की तरह ही थे (आयतें 31, 32)।[30] वास्तव में अधिक देर नहीं हुई थी (आयत 36) जब उन्होंने परमेश्वर के भेजे हुओं को सताया और मार डाला था (आयत 34[31])। यदि उन्हें मसीह के दावे का सबूत चाहिए था, तो वे इस तथ्य पर विचार कर सकते थे कि उसी समय वे *उसे* अर्थात परमेश्वर के अपने पुत्र को मारने का षड्यन्त्र रच रहे थे। यीशु ने उन्हें बताया कि परमेश्वर के दूतों के साथ उनके व्यवहार के कारण, ''जितने धर्मियों का लोहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा। ... सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी'' (आयतें 35, 36)।

विलाप (मत्ती 23:37-39)

लगभग दो हज़ार वर्ष पहले कहे गए होने के बावजूद यीशु के शब्द आज भी हमारे कानों से धुआं निकाल देते हैं। परन्तु मैं फिर कहता हूं कि उन शब्दों की कठोरता के कारण हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि मसीह का उद्देश्य अपने शत्रुओं की भर्त्सना करना ही था।

मित्र हों या शत्रु, अपने सुनने वालों के प्रति वह हमेशा *गंभीर* रहता था। बाइबल कहती है कि ''यहोवा जिससे प्रेम रखता है उसे डांटता है'' (नीतिवचन 3:12क; देखें इब्रानियों 12:6)। डांटने वाले प्रेम के शब्द अध्याय के अन्तिम शब्द बन जाते हैं।

यीशु पहले यरूशलेम पर रोया था (लूका 19:41-44)। अब उसने कहा, ''हे यरूशलेम, हे यरूशलेम; तू जो भविष्यवक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करता है'' (मत्ती 23:37क)।[32] पिछले समय में, यरूशलेम ने परमेश्वर के नबियों को ठुकरा दिया था। अब वह स्वयं मसीहा को ठुकरा रहा था। ''कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है,[33] वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा'' (आयत 37ख)। ''दाऊद के नगर''[34] ने परमेश्वर के पुत्र को ठुकरा दिया था, जिससे उसका मन दुखी हुआ था।

नगर में लोगों के मन की कठोरता के कारण, भयानक समय आने वाले थे: ''देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है'' (आयत 38)। ''घर'' शब्द मन्दिर के लिए इस्तेमाल किया जाता था।[35] चालीस से भी कम वर्षों में, वह मन्दिर रोमियों द्वारा नगर समेत नाश हो जाना था।[36] यह भयानक घटना होनी इतनी सुनिश्चित थी कि मसीह ने इसे इतने विश्वास से कहा, जैसे यह पहले ही हो चुका हो।

तौ भी यीशु नगर से और इसके लोगों से प्रेम करता था और चाहता था कि वे उसे स्वीकार करके इस नाश से बच जाएं।[37] यह तड़प उसके अन्तिम शब्दों में मिलती है: ''क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे'' (आयत 39)। आयत 39 का अन्तिम भाग मसीहा से सम्बन्धित भजन [भजन संहिता 118][38] की आयत 26 से लिया गया है और मसीहा के आने के आनन्द की बात करता है। कुछ दिन पहले, यरूशलेम में मसीह के प्रवेश पर यही शब्द गूंजे थे (मत्ती 21:9; मरकुस 11:9; लूका 19:38; यूहन्ना 12:13)। अफसोस, नगर के लोगों ने उनके शब्दों का अर्थ नहीं समझा। यदि उन्हें दोबारा यीशु को ''देखने'' की इच्छा होती (अपने उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में) तो उनके लिए *अपने मनों से* यह शब्द कहने आवश्यक थे। यरूशलेम की यही एकमात्र आशा थी।[39]

सारांश

इस अध्ययन की समाप्ति पर आकर, आइए इन आयतों से तीन मुख्य सच्चाइयों को याद करते हैं:[40]

(1) परमेश्वर कपट से घृणा करता है। हम सब अपने-अपने मन को जांचें।

(2) परमेश्वर विश्वास चाहता है। आइए हम सब कहें, ''धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है'' और उसे प्रभु मानें।

(3) परमेश्वर आज्ञाकारिता चाहता है। आइए हम तुरन्त उसकी बात मानें,[41] ताकि प्रभु हमसे कभी यह न कहे, ''कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी [तुम्हें] इकट्ठे करूं, परन्तु तुम ने न चाहा''!

टिप्पणियां

[1]चेतावनी में यीशु ने सदूकियों और हेरोदियों की भी बात की (मत्ती 16:6; मरकुस 8:15)। परन्तु इस प्रस्तुति में फरीसियों पर ज़ोर दिया गया है। [2]आप कहानी को विस्तार से बता सकते हैं। [3]सामान्य अर्थ में आप फरीसियों के बारे में संक्षिप्त समीक्षा बता सकते हैं। [4]यह मानते हुए कि ''विजयी ... और अब भी चैम्पियन है!'' पाठ बाइबल क्लास के दौरान दिया गया था और यह संदेश प्रात: काल की आराधना में दिया जा रहा है। [5]कम से कम, यह जिसे हम कपट होना *मानते हैं,* दूसरों में देखना आसान है (''विजयी ... और अब भी चैम्पियन है!'' पाठ में दूसरों को कपटी कहने की अनुपयुक्तता पर मेरी टिप्पणियां देखें)। [6]अगले नोट्स में मैंने वचन की प्रासंगिकता कम से कम रखी है। जहां आप रहते हैं, वहां की सामाजिक, नैतिक और धार्मिक परिस्थिति के अनुकूल प्रासंगिकता बनाएं। [7]इस भाग के तीन उप-भाग वारेन वियर्सबे, *द बाइबल एक्पोज़िशन कमैन्ट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोयस: विक्टर बुक्स, 1989), 83-86 से लिए गए हैं। [8]आप ''विजयी ... और अब भी चैम्पियन हैं!'' पाठ में ''कपटी'' शब्द के अर्थ पर विचार कर सकते हैं। [9]जहां हम रहते हैं, वहां कहा जा सकता है कि ''उन्होंने बचाव के तरीके निकाल लिए थे।'' [10]व्यवस्थाविवरण 6:8, 9 परमेश्वर की व्यवस्था को हृदय और मन पर लिखने और इसके घर के लिए मापदण्ड बनाने के लिए बात करता है (देखें निर्गमन 13:9; व्यवस्थाविवरण 11:18क)। परन्तु व्यवस्था की बात मानने से डिब्बी पहनना आसान है।

[11]मुझे इसमें हंसी लगती है: ''मैं तुम से अधिक आत्मिक हूं क्योंकि मेरी डिब्बी तुम से बड़ी है।'' [12]पिछले पाठों में हमने देखा था कि लोग यीशु के वस्त्र की ''झालर'' को छूकर उन आंचलों को छू रहे होंगे (मत्ती 9:20; 14:36)। [13]फरीसियों के ''आडम्बरी प्रदर्शनों'' की बात करते हुए आप उनके लम्बी-लम्बी प्रार्थनाओं करने जैसे अन्य उदाहरण दे सकते हैं (मत्ती 23:14; मरकुस 12:40)। [14]अमेरिका में कई बार हम ''शक्ति'' वाले वस्त्र पहनने की बात सुनते हैं जिनसे माना जाता है कि उनके पहनने वाला विशेष महत्व वाला व्यक्ति है। फरीसी और धर्मशास्त्री अपने ''शक्ति वाले वस्त्र'' पहनते थे। [15]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 313. [16]यीशु के चेले उसे ''रब्बी'' कहते थे (मत्ती 26:25; मरकुस 9:5; यूहन्ना 3:2)। [17]आयत 10 के बाद यीशु ने दीनता की आवश्यकता के बारे में पहले कहे गए शब्द दोहराए (आयतें 11, 12; देखें मत्ती 20:26, 27; मरकुस 10:43, 44)। [18]पौलुस ने अपने आप को उनका आत्मिक ''पिता'' कहा, जिन्हें उसने सिखाया था (1 कुरिन्थियों 4:15), परन्तु वे फिर भी उसे ''फादर पौलुस'' कहकर सलाम नहीं करते थे। [19]मत्ती 23:14 में आठवीं हाय मिलती है और कोष्ठकों में दी गई है। यद्यपि मत्ती में यह आरम्भिक हस्तलेखों में नहीं मिलती, मरकुस और लूका स्पष्ट कर देते हैं कि इस अवसर पर निंदा के यीशु के शब्दों में यह थी। इस प्रस्तुति में मैं मत्ती में जहां यह पाई जाती है, वहीं अर्थात आठवीं ''हाय'' को शामिल करूंगा। [20]डेविड स्मिथ, *अवर लॉर्ड'स अर्थली लाइफ़* (न्यू यॉर्क: जी. एच. डोरन, 1926), 353; एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 194 में उद्धृत।

[21]वारेन वियर्सबे ने ''हायों'' को धन्य वचनों से अलग करते हुए अलग ढंग अपनाया (वियर्सबे, 84-86)। [22]''मसीह का जीवन, भाग 4'' में पृष्ठ 117 पर लूका 11:52 पर टिप्पणियां देखें। [23]हम पक्का नहीं कह सकते कि वे कैसे ''विधवाओं के घर खा जाते'' थे, पर हम ऐसा ही बेईमानी वाला व्यवहार कुछ बेईमान वकीलों का देखेंगे। [24]कोय रोपर, ''फैक्टर्स कंट्रिब्यूटिंग टू द ओरिजन एण्ड सक्सैस ऑफ़ द प्री-क्रिश्चियन ज्युइश मिशनरी मूव्मैंट'' (Ph.D. diss., यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिशिगन, 1988), 20-49. [25]वाक्यांशों में ''का'' का इब्रानी इस्तेमाल ''के स्वभाव वाला'' का अर्थ देने के लिए किया जाता था। याकूब ने याकूब 3:6 में जीभ के बारे में ऐसा ही विचार प्रयोग किया। [26]पुदीना स्वाद के लिए इस्तेमाल किया जाता था। खाने में और या दवाइयां बनाने के लिए भी सौंफ और जीरा का इस्तेमाल किया जाता था। [27]''भारी'' शब्द के बारे में ''विजयी ... और अब भी चैम्पियन है!'' पाठ में ''हल्की'' औरी ''भारी'' पर टिप्पणियां देखें। [28]इस बातचीत में यीशु ने दो बार उन्हें ''हे अन्धे अगुवो'' कहा (आयतें 16, 24)। इस शब्द के महत्व के बारे में, देखें मत्ती 15:14. [29]''हायों'' के बीच काफ़ी मेल है, पर प्रभु ने प्रत्येक को अलग-अलग करके बताना उचित

समझा। [30]इसलिए यीशु ने उन्हें ''धर्मी हाबिल से लेकर ... जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है सब'' के लिए उन्हें जिम्मेदार बताया (मत्ती 23:35)। हाबिल की मृत्यु का वर्णन उत्पत्ति 4:8 में है; जकर्याह (छोटा नबी नहीं) की मृत्यु का वर्णन 2 इतिहास 24:20-22 में है। क्योंकि इब्रानी बाइबल उत्पत्ति से आरम्भ करके 2 इतिहास के साथ समाप्त होती है, इसलिए ''आरम्भ से अन्त तक'' कहने की तरह ही है।

[31]प्रेरितों के काम की पुस्तक आयत 34 पर अच्छी टीका है। ''अपने आराधनालयों में कोड़े'' वाक्यांश पर ध्यान दें। पौलुस को आराधनालय में कई बार मारा गया था (2 कुरिन्थियों 11:23)। [32]मत्ती 23:37-39 के शब्द पिरिया में रहते समय यीशु द्वारा कहे गए पहले शब्दों का दोहराया जाना था (लूका 13:34, 35)। [33]मैंने मुर्गियों को अपने पंखों के नीचे चूजों को इकट्ठे करते देखा है, पर हमारे बहुत से जवान लोगों ने नहीं देखा है। यदि आपके सुनने वालों ने नहीं देखा है, तो आप इस मरमस्पर्शी दृश्य को समझाने के लिए कुछ समय लगा सकते हैं। [34]देखें भजन संहिता 48:1, 8. [35]आयत 38 की तुलना यिर्मयाह 12:7 से करें। [36]'खोए गए अवसर'' पाठ में लूका 19:41-44 पर टिप्पणियां देखें। यरूशलेम के आने वाले विनाश (मन्दिर सहित) पर इस शृंखला में अगले कुछ पाठों में और विस्तार से चर्चा की जाएगी। [37]योना ने नीनवे के विनाश की भविष्यवाणी की थी (योना 3:4); पर जब लोगों ने मन फिराया, तो परमेश्वर ने उस नगर को नाश नहीं किया था (योना 3:10)। परमेश्वर अनुग्रहकारी परमेश्वर है। [38]भजन संहिता 118 को मसीहा से जुड़ा भजन माना जाता था (देखें प्रेरितों 4:11)। दिन में पहले, मसीह ने भजन संहिता 118 की आयत 22 को उद्धृत किया था (मत्ती 21:42), जिसमें भविष्यवाणी थी कि अगुवे उसे ठुकराएंगे। [39]मत्ती 23:39 अस्पष्ट है। इसका अर्थ है कि ''मेरे जाने के बाद, तुम मुझे तब तक दोबारा नहीं देखोगे जब तक मैं *न्याय* में नहीं आता'' (जो यरूशलेम के विनाश की बात है)। परन्तु भजन संहिता 118:26 नकारात्मक नहीं, सकारात्मक है। इसलिए मैंने इस आयत की सकारात्मक व्याख्या दी है। इसके साथ ही नगर की कठोर स्थिति भी ध्यान में रखनी आवश्यक है। यीशु द्वारा प्रस्तावित स्थिति को पूरा करने की थोड़ी सी आशा थी। इस आयत पर एक अन्तिम टिप्पणी: यह यह *नहीं* सिखाती कि यीशु एक दिन हज़ार वर्ष तक राज करने के लिए पृथ्वी पर दोबारा आएगा, जब यरूशलेम में उसका स्वागगत किया जाएगा। आर. टी. फ्रांस ने लिखा है कि ''*जब तक तुम न कहोगे* यूनानी में शब्दों में एक दृढ़ भविष्यवाणी के बजाय अनिश्चित सम्भावना के रूप में व्यक्त किया जाता होगा; ... ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं है कि यह शर्त पूरी ही होगी।'' इसके अलावा, उसने लिखा है कि ''भविष्य में मन फिराने की भविष्यवाणी अध्याय 23 के विचार को अन्त तक बनाए रखने के बाहर ही नहीं (जिसका यह चरम है), बल्कि [मत्ती द्वारा दिए] सुसमाचार [के वृत्तांतों] के परिप्रेक्ष्य के साथ भी होगी, जिसे बार-बार इस्राएल को मिलने वाले अन्तिम अवसर और परमेश्वर के एक अन्तरराष्ट्रीय लोगों के रूप में कहा गया है (8:11-12; 12:38-45; 21:40-43; 22:7; 23:32-36; आदि)। ... *के लिए* जिससे आयत शुरू होती है स्पष्ट रूप से इसे आयत 38 में परमेश्वर के अपना घर छोड़ने के साथ जोड़ता है।'' (आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985], 332-33)। [40]मैंने कुछ सम्भावित अन्तिम प्रासंगिकताएं दी हैं। आप उन्हें विस्तार दे सकते हैं, या अपने सुनने वालों के हिसाब से और प्रासंगिकताएं दे सकते हैं।

[41]आपको चाहिए कि गैर मसीहियों को बताएं कि वे कैसे ग्रहण करें (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38) और अविश्वासी मसीहियों को बताएं कि वे कैसे परमेश्वर के पास वापस आ सकते हैं (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9; याकूब 5:16)।